नहीं बदला है मनातू व मंझौली का सूरेतहाल

चार : भाग तीन

अरविंद

यह वह इलाका है, जहां बूढ़े-पुराने लोग 60 के दशक में मनातू मोहवार यानी मनातू के आदमखोर नाम से बदनाम अत्याचारी जमींदार जगदीश्वर जीत सिंह की चर्चा से अब भी सिहर उठते हैं. हजारों एकड़ भूमि पर कब्जा करके लोगों से उस पर बेगारी खटानेवाले इस अत्याचारी जमींदार ने अपने एक पालतू चीते से दहशत फैला रखी थी. अस्सी के दशक के बाद उस जमींदार का भले पतन हो गया, लेकिन सामाजिक संरचना में अब भी ऐसे तत्व विविध नाम-रूप में मौजूद हैं.

खैर, लेस्लीगंज से पांकी रोड में मुरुबारु, कंदुरी, रामसागर, सगालिम, तरहसी मोड़ होते हुए पद्मा और सेमरी के बाद मनातू पड़ता है. लक्ष्मी देवी बताती हैं कि 'कमोबेश हर परिवार में एक दो-लोग पंजाब, डिहरी, सासाराम पलायन कर गये हैं. गरमी से लेकर मानसून शुरू होने के पहले तक भुखों मरने के दिन होते हैं. पलायन के दूसरे सीजन में लोग छठ के बाद खेतों में काम के लिए और फरवरी-मार्च में गेहूं की फसल के लिए जाते हैं. बाकी छह माह में मजदूरी और सरकारी अनाज पर निर्भर करना पड़ता है.' दामोदर बताते हैं कि क्षेत्र में मार्च-अप्रैल में राशन नहीं मिला है. अलग-अलग समुदायों के पास एपीएल, बीपीएल, अन्नपूर्णा व अंत्योदय कार्ड हैं. पर रंगया, घिरसिटी और सरगुजा में आदिम जनजाति (प्रिमिटिव ट्राइबल ग्रुप) के सात परिवारों में पीला कार्ड नहीं था. पांच गरीब विधवाओं को पेंशन सुविधा नहीं मिली है.

2002 में मंझौली तथा नवाडीहा गांव के कुसुमाटांड में एक-एक मौत के बाद मनातू चर्चित हुआ था. देख कर आश्चर्य होता है कि मनातू प्रखंड बंद रहता है. लक्ष्मी, दामोदर जैसे सामाजिक कार्यकर्ता बताते हैं कि महीनों बाद बीडीओ-सीओ आते हैं. पर पलामू डीसी प्रखंड कार्यालय बंद रहने की बात से इनकार करते हैं. मनातू, लेस्लीगंज, पाटन जैसे संवेदनशील प्रखंडों के बंद या डिफंक्ट रहने की पुष्टि अर्थशास्त्री ज्यां द्रेज, पत्रकार गोकुल वसंत तथा सामाजिक कार्यकर्ता रामराज आदि भी करते हैं. जाहिर है, पंचायत चुनाव नहीं होने से विकास व राहत कार्यों के लिए प्रखंड व अंचल कार्यालय ही एकमात्र गवर्नमेंट एजेंसी हैं, पर इनके बंद रहने से बिचौलियों व ठेकेदारों की पौ बाहर है.

मंझौली गांव में 2002 में पांचू उरांव की भूख से मौत हो गयी थी. उनकी विधवा भगमनिया कुंवर (46) बताती हैं कि 'उ अकाल में घर में अनाज जरको न हलइ. उ बीमार हलन. उही हालत में बाहर कमाये रांची गइलन. पर छुछे हाथ गेलन और छूछे अइलन. आवे के कुछ दिन बाद भूखे रहे ला पड़ गइल, फिर उ मर गेलथी. का करू, भगवान भरोसे ही. जब तक जींदगी हइ, कइसहु चलइत हइ.' उनके परिवार में अब तीन बेटी और एक बेटा मिला कर पांच लोग हैं. देखने पर पता चलता है कि घर में थोड़ा महुआ है. दो किलो सेम है. मजदूरी से कमाया कुछ सेर धान गेहूं है. पेट भरने के लिए साल, महुआ और वनतुलसी झाड़ कर लाये हुए हैं. 17 साल का उनका बेटा उपेंद्र पंजाब व आंध्र प्रदेश में काम करने जाता रहता है. इनके पास तीन कट्ठा जमीन है, पर खेती नहीं. दूसरों के यहां मजदूरी, रोपनी, कटनी आदि से परिवार चलता है. अन्नपूर्णा कार्ड है, पर सितंबर 2009 में वृद्धावस्था पेंशन के लिए अप्लाइ किया है.

रास्ते में जशपुर जानेवाली सड़क में मनातू चेकनाका के पास एक झोलाछाप डॉक्टर का बोर्ड टंगा दिखता है. डॉ एसपी गुप्ता, एचएलएमएस, एलएलबी. 'एचएलएमएस' चाहे कोई डॉक्टरी डिग्री हो या न हो, पर एलएलबी का डॉक्टरी से कतई ताल्लुक नहीं है, यह भोले-भाले ग्रामीण नहीं जानते. ऐसे अजीबोगरीब डॉक्टर पलामू के देहातों में आम हैं.

कुसुमाटांड नवडीहा गांव का एक टोला है. लेकिन पद्मा से मनातू को जानेवाली मुख्य सड़क से दो किमी अंदर है. रास्ता बेहद पथरीला और दो पहिया वाहन जाने लायक नहीं है. इलाका टंडवा पहाड़ और नवडीहा जंगल से घिरा है. यहीं 2002 में सुंदर भुइयां की मौत भुखमरी से हुई थी. बेहद चर्चित गांव होने के बावजूद अब तक कोई मोरम या पीसीसी पथ नहीं बन सका है. इसे देख कर पता चलता है कि झारखंड में 35 प्रतिशत इलाकों में मुख्य पथ से जोड़नेवाली सड़क नहीं है. वर्ल्ड बैंक के अध्ययन (2007) में अधिसंरचना के मामले में झारखंड का स्थान 28 राज्यों में 22वां था.

सुंदर भुइयां की विधवा जागो कुंवर (43) के परिवार में पांच लोग हैं. मौत के बाद अंत्योदय कार्ड बना है. मगर नकद आमदनी की व्यवस्था नहीं है. उनके बीस वर्षीय बेटे बृजमोहन बताते हैं कि 'अभी घर में एक दो सेर धान बचल बा. खेती एके बीघा हवा पर एके ठो बैल बा. मजूरी करके परिवार चलेला.' कुसुमाटांड टोले में हरिजनों के अलावा मुसलमानों के 35 और खरवारों के करीब पंद्रह घर हैं. 36 साल की रीना देवी अपने पति रामजनम सिंह खरवार के बारे में बताती हैं कि 'गेहूं बिना पटवन के मर गइल और मकई एइसने खतम हो गइल. तीन महीने पहले पत्थल तोड़े का काम करे उ गोवा गइले बाड़न और आषाढ़ में आवे के अंदेशा बा.' खरवार महिलाएं झारखंड में सबसे कम यानी 13.9 प्रतिशत ही शिक्षित हैं. गांव में किशोर या युवा नहीं दिखते. 62 साल के मोहम्मद अफीक अंसारी बताते हैं कि 'नवडीहा में 300 के करीब अंसार लोग हैं. पंचायत में सुगियातरी, मधिया, रहेया, घंघरी जइसन गांव हैं. गांव में न तो बिजली है, न सडक ही. हमर बेटवन सब दिल्ली, चंडीगढ़ में कुली व मजदूर करते हैं. उ सब आषाढ़, सावन में दू चार महीने के लिए आवेलन. बारिश के मिजाज देखके लौटेलन.' *(जारी)*

(सीएसडीएस के इनक्लूसिव मीडिया फेलोशिप के तहत लिखी गयी रिपोर्ट.)

प्रभात खबर
रांची, शुक्रवार, 25 जून, 2010